इकाई 1 फारसी इतिहास और संस्मरण*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 फारसी का विस्तृत होता क्षेत्र

1.2.1 फारसी में प्रशिक्षण

1.2.2 लिपिकों के लेखन

1.3 संस्मरण

1.3.1 जहाँगीरनामा

1.3.2 पादशाहनामा

1.4 नामा परपंरा

1.5 दबिस्तान–ए–मजाहिब

1.6 शब्दकोश

1.7 मुगल दरबार से परे फैलाव

1.7.1 क्षेत्रीय नकलें

1.8 फारसी और देशी भाषाएँ

1.8.1 उर्दु का उद्य

1.8.2 दो–भाषी

1.9 सारांश

1.10 शब्दावली

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान लिखे गये कुछ फारसी ग्रन्थों से परिचित होंगे;
- मुगल भारत में फारसी के लिपिक वर्ग के विकास को जानेंगे;
- दरबारों की भाषा के रूप में फारसी के विकास के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों में इसके प्रवेश को समझेगें; और
- भारतीय देशी भाषाओं पर फारसी के प्रभावों को सराहेगें।

*डॉ. प्रतीक, मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

1.1 प्रस्तावना

सत्रहवीं और अठारहवीं सदी भारत को फारसी भाषा के और अधिक विकास से चिन्हित किया जा सकता हैं। बादशाह अकबर के शासनकाल के दौरान जिस प्रक्रिया ने गति प्राप्त की थी उसने अगली दो शताब्दियों के दौरान अदब, अखलाक, साहित्य और दरबारी शिष्टाचार के क्षेत्रों में फारसी भाषा के व्यापक प्रसार के लिए उसमें और अधिक तीव्रता दिखी। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में फारसी के विकास को, एक साथ होने वाली, तीन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं से समझा जा सकता है। सबसे पहले, मुगल साम्राज्य की राजनैतिक शक्ति ने स्वयं को मजबूती से स्थापित कर लिया था जिससे राज्य गठन की तीव्रता बढ़ गई थी, और जिसके लिए साम्राज्य के तंत्र को प्रबन्धित करने के लिए एक विस्तृत प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता थी। फारसी के मुगल साम्राज्य की आधिकारिक भाषा होने के कारण, मुख्य रूप से फारसी भाषा में लिखे गये सभी प्रकार के प्रशासनिक दस्तावेजों, अभिलेखों और सम्प्रेषणों के उत्पादन में जबरदस्त उभार देखा गया। दूसरे, मुगल दरबार नैतिक मूल्यों, आचार संहिता, दरबारी शिष्टाचार को विकसित करने वाली उच्च संस्कृति के प्रसार का केन्द्र था। और इसने भारत के राजनैतिक अभिजात वर्ग द्वारा अनुसरण और अनुकरण के लिए एक आदर्श उदाहरण स्थापित किया। इस प्रकार फारसी उच्च संस्कृति और परिष्करण की भाषा बन गई। इस प्रकार विकसित फारसी अदब (परिष्कृत आचरण) और अखलाक (नैतिकता) साहित्य ने मुगलों को भारत में और बृहद फारसी दुनिया में भी उन्हें केन्द्र में रखने के उनके राजनीतिक प्रयास में मदद की। भारत के सभी क्षेत्रों में फारसी साहित्यिक उत्पादन का प्रसार इस काल की एक खास विशेषता थी। तीसरा, फारसी ने भारत की विभिन्न स्थानीय संस्कृतियों और देशी भाषाओं पर, फारसी संवेदनाओं, कल्पना, काव्य रूपों और शैलियों से परिचित कराकर, बहुत प्रभाव डाला। फारसी ने बड़ी संख्या में बहु–भाषाविदों, देशी कवियों, नौकरशाहों और साहित्यकारों की मदद से, जो विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के बीच सांस्कृतिक विनिमय कर सकते थे, देशी भाषाओं और बोलियों पर परस्पर प्रभाव डाला। अठारहवीं शताब्दी में इस अन्तःक्रिया के कारण रेख्ता का उदय हुआ, जिसकी परिणति उर्दू के रूप में एक पूर्ण भाषा के विकास के रूप में हुई, जिसने बाद के मुगलों की अवधि के दौरान इसने वास्तव में इसे प्रतिस्थापित कर दिया।

पर्शियन जिसे 'फारसी' के नाम में भी जाना जाता है, कई पूर्व आधुनिक समाजों में साहित्यिक भाषा रही थी और यह गैर–अरब इस्लामी दुनिया में सम्पर्क भाषा के रूप में कार्य करती थी। यह एक ऐसी भाषा थी जिसने भारत को वृहत मध्य–एशिया और मध्य–पूर्व क्षेत्रों से जोड़ा। फारसी बोलने वाली दुनिया के लिये भारत के बारे में ज्ञान और जानकारी का निर्माण करने का एक माध्यम बन गई। भारत की धन और वैभव की एक भूमि की छवि ने दुनिया भर से विशेष रूप से फारसी भाषी इस्लामी दुनिया से प्रतिभाओं को आकर्षित किया। मार्शल हॉगसन ने अपनी पुस्तक, द वेचंर ऑफ इस्लामः द एक्पेशंन ऑफ इस्लाम इन द मिडिल पीरियड्स, में पर्शिनियेट शब्द गढ़ा था, जिसमें उन्होंने कहा कि फारसी ''साहित्यिक स्तर पर अभी भी अन्य भाषाओं के उदय के लिए मुख्य प्रतिमान थी ... उच्च संस्कृति की अधिकांश स्थानीय भाषाएँ जिनका बाद में मुसलमानों द्वारा इस्तेमाल किया गया था, वैसे भी, पूरी तरह हो या आंशिक रूप से, अपनी साहित्यिक प्रेरणा के लिए फारसी पर निर्भर थी। हम फारसी में नजर आती या फारसी प्रेरणा को प्रतिबिंबित करने वाली सांस्कृतिक परंपराओं को, 'पर्शिनियेट' कह सकते हैं''। आमतौर पर गैर मुस्लिम दुनिया के इतिहास और साहित्य का अध्ययन करने के लिए

विद्वानों द्वारा पर्शिनियेट' की इस अवधारणा का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। मध्य–पूर्वी क्षेत्र और मध्य–एशियाई क्षेत्र की बृहद राजनैतिक संस्कृति में भारतीय उपमहाद्वीप के शासकों द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रिचर्ड एम. ईटन ने भारत के इतिहास में 1000–1765 के बीच की अवधि को पर्शिनियेट युग के रूप में परिभाषित किया है। हालांकि, ईरानी और फारसी के बीच अन्तर को समझना महत्वपूर्ण है। फारसी ईरान की संस्कृति और 'फारसी' संस्कृति से पहचानी जानी वाली दुनिया दोनों को दर्शाती है, इसलिए फारसी होने का मतलब मात्र ईरानी नहीं है। भारतीय उपमहाद्वीप के उदाहरण इस अन्तर को और अधिक स्पष्ट करते हैंः अमीर खुसरो एक फारसी कवि थे जो ईरानी नहीं थे, बल्कि एक भारतीय थे जिन्होंने फारसी भाषा में लिखा था। फारसी साहित्य केवल ईरान के लिए ही नहीं था बल्कि एशिया के बड़े भाग में प्रचलित था। सुनील शर्मा ने अपनी पुस्तक मुगल अर्काडियाः पर्शियन लिटरेचर इन एन इंडियन कोर्ट में इंडों फारसी साहित्य को ''फारसी साहित्य के निकाय के रूप में परिभाषित किया है, जो उपमहाद्वीप से संबंधित था अैर सचेतन रूप से तैयार किया गया था, चाहे लेखक भारतीय या ईरानी मूल का रहा हो''। इंडों फारसी साहित्य ने अपनी विशिष्ट शैली के साथ फारसी दुनिया में एक विशिष्ट स्थान और पहचान बनाई थी, जिसे सबक–ए–हिन्दी और इस्तेमाल–ए–हिन्दी के नाम से जाना जाता है।

1.2 फारसी का विस्तृत होता क्षेत्र

भारत में फारसी की कई विधाएं प्रचलित थीं जैसे तारिख (इतिहास), संस्मरण, मालफ़ुज़ात (सूफी निर्देशात्मक साहित्य), तज़कीरा (जीवनी संग्रह), नसीहत–नामा (सलाह साहित्य), वाकया (दरबार की कार्यवाही की रिपोर्ट), अखबारात, (समाचार रिपोर्ट), दस्तूर–अल–अमल (राजस्व नियमावली), ईंशा (राज्य के दस्तावेजों और पत्रों की रचना), मनाकिब (स्तुति वर्णन), फरहांग (कोश रचना), अदब (शिक्षात्मक ग्रन्थ), अखलाक् (नैतिकता) आदि और अनेक अन्य। कविताओं में फारसी की प्रमुख शैलियों के रूप में मसनवी (लम्बा छन्दबद्ध वृत्तांत), गजल (प्रेम कविताएँ) और कसिदा (गीति काव्य) थीं।

अकबर द्वारा सभी स्तरों पर प्रशासन की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के निर्णय से भारत में फारसी भाषा को बढ़ावा मिला। यह परिवर्तन जाने माने ईरानी अभिजात्य फतुल्लाह शिराज़ी द्वारा लाया गया था, जिन्होंने मुगलों को राजस्व प्रणाली और अन्य प्रशासनिक कार्यालयों को सुव्यवस्थित करने में मदद की थी। यह ईरानी लिपिक (नवीसिन्दगन) और मुतसद्दी थे जिन्होंने फारसी भाषा और लेखे–जोखे में अपनी दक्षता के कारण मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। लेकिन जल्द ही रिकार्ड रखने और लिखित दस्तावेजीकरण की परंपरा में वृद्धि के कारण, सत्रहवीं शताब्दी में हिन्दु लिपिकों का एक वर्ग उभरा, जिन्होंने भारत में मुगलों की सत्ता की स्थापना के बाद बदलती राजनैतिक और आर्थिक परिस्थितियों में स्वयं को अनुकूलित किया। फारसी ने कायस्थों, खत्रियों, वैश्यों और ब्राह्मणों के लिए अवसरों के द्वार खोले जो भारत के पारम्परिक लेखाकार, लिपिक और सचिव थे। फारसी के द्वारा हिन्दवी के विस्थापन ने इन जातियों को मकतबों (स्कूलों) और मदरसों में फारसी सीखने के लिए प्रेरित किया और जहाँ उन्होंने राजस्व पत्रकार, भूमि पंजीयक (कानूनगो), ग्राम लेखाकार (पटवारी), सर्वेक्षक, याचिका लेखक, पत्र लेखन (ईंशा), लेखाविधि (सियाक), अदालत के पाठक, सचिव और लिपिक (मुंशी, मुनीम) बनने का कौशल हासिल किया।

1.2.1 फारसी में प्रशिक्षण

मदरसों में फारसी पढ़ने वाले छात्रों ने पहले अंकगणित (सियाक, हिसाब), माप (मसाहत), गणित (रियाजी), ज्यामिति, घरेलू अर्थशास्त्र (तदबीर–इमंजिल), चिकित्सा, तर्क, प्रशासन के नियम (सियासत ए मुदुन), भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान (तबी और इलाही), आदि की कुछ मूल बातें सीखीं। गहन ज्ञान के लिये शेख सादी के *बुस्तान* और *गुलिस्तान*, ख्वाजा नसीरूद्दीन तुसी के *अखलाक–ए–नासिरी* आदि का अध्ययन शामिल था। पठन के लिए नियत आवश्यक इतिवृतों में *तारिख–ए–गुज़िदा*, *ज़फरनामा*, *हबीब–उस–सियार*, अबुल फजल का *अकबरनामा* आदि थे। अबुल फजल के इन्शा लेखन की कला भी एक आवश्यक पठन सामग्री थी।

1654 में बादशाह औरंगजेब के अपने बेटे मुहम्मद सुल्तान को लिखे गये पत्र से यह विदित होता है कि शाही घराने की शिक्षा और शिक्षण में फारसी को अन्य भाषाओं पर विशेषाधिकार प्राप्त था। उन्होंने शहजादे को फारसी गद्य और कविता पढ़ना और लिखना सीखने की सलाह दी। उन्होंने आगे विस्तार से बताया, *अकबरनामा* को फुर्सत में पढ़ें ताकि आपकी बातचीत और लेखन की शैली शुद्ध और सुरूचिपूर्ण हो सके। इससे पहले कि आप शब्दों के अर्थों और उनके इस्तेमाल किये जा सकने वाले उचित संबंध में पूरी तरह से महारत हासिल ना कर लें, उन्हें अपने भाषणों और पत्रों में इस्तेमाल ना करें। आप जो बोलते या लिखते हैं उस पर ध्यान से विचार करें।

1.2.2 लिपिकों के लेखन

इसका एक बेहतरीन उदाहरण मुंशी चन्दरभान ब्राह्मण द्वारा लिखी गई पुस्तक (1666–70) *चहार चमन* (चार बगीचे) है। उनका जन्म सोलहवीं शताब्दी के अन्त में लाहौर, पंजाब में हुआ था और उन्हें जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब, तीनों बादशाहों के यहाँ सेवा करने का अनुभव था। वह एक अभिजात्य राज्य सचिव, फारसी कवि और गद्य लेखक थे, जिनकी पुस्तक *चहार चमन* मुगलों की सेवा करने के उनके व्यक्तिगत अनुभवों का एक वृत्तांत और विशेषज्ञ सचिव बनने के लिए आकांक्षी लोगों के लिए एक नियमावली थी। इस प्रकार पुस्तक की शैली संस्मरण सलाह पुस्तक (नसीहतनामा) थी, जिसमें नैतिक व्यवहार (अखलाक़), रहस्यमय संवेदनाओं, शिष्टता, दक्षता, सार्वजनिक नैतिकता, नीति प्रायणता आदि पर जोर दिया गया था। उन्हें अपने ब्राह्मण वंश पर गर्व था और उन्होंने अपनी धार्मिक ब्राह्मणवादी पृष्ठभूमि को श्रेय दिया जिसके कारण वह फारसी इस्लामी रहस्यवाद को समझ पाये थे। शाहजहाँनाबाद (दार–अल–हुकूमत) और लाहौर (दार–अल–सलामत) के शहरों के वर्णन के लिए उनकी पुस्तक विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

राज्य सेवा में शामिल होने की लिपिक परिवारों के बीच एक पुरानी परंपरा थी। मुंशी चन्दरभान ने अपने बेटे ख्वाजा तेजभान को प्रशिक्षित किया था, जिससे एक कुशल मुंशी के रूप में मुगल सेवा में शामिल होने की पारिवारिक परंपरा को जारी रखने की उम्मीद की गई थी। चन्दरभान का अपने पुत्र के नाम पत्र इस तरह के इच्छुक प्रशिक्षुओं के लिए निर्धारित प्रशिक्षण पद्धति, अनुक्रमणीय पाठ्यक्रम और शिक्षात्मक मूल्यों का एक मूल्यवान उदाहरण है। उन्होंने सलाह दी कि एक मुंशी को "मुगल प्रणाली के मानदंडों या अखलाक में प्रशिक्षण से गुजरना चाहिए क्योंकि इससे ज्ञान का विस्तार होगा; इतिहास, दीवान और मसनवी की रचनाओं को पढ़ना चाहिए; सियाक और नवीसिदंगी (लिपिक तकनीक) के कौशल सीखने चाहिए, क्योंकि एक

व्यक्ति जो अच्छे गद्य को लेखाविधि से मिलान कर सकता है वह 'रोशनी के बीच भी एक उज्जवल प्रकाश है'; उसे बुद्धिमान और सद्गुणी होनी चाहिए; और सबसे बढ़कर अपनी भाषायी क्षमताओं को बढ़ाना और सुधारना चाहिए''।

चहार चमन, चन्दरभान की एक अन्य रचना *मुशांत–ए–ब्राह्मण* के साथ सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में फारसी गद्य लेखन में सबसे अधिक प्रचलित रचनाओं में से दो रचनाएँ थी। वह लिपिक समुदाय के लिए प्रेरणा बने रहे जैसा कि हिसार के बालकृष्ण ब्राह्मण के उदाहरण से पता चलता है, जिन्होंने अपने आदर्श व्यक्ति चन्दरभान की शैली का अनुकरण करके *चहार बहार* लिखा था। वह शाहजहाँ और औरंगजेब के शासन काल के दौरान मुगल प्रशासनिक सेवा में थे। मुगल प्रशासन के लिपिकों और सचिवों द्वारा रचित कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ मुल्तान के हरकरन दास काम्बोह द्वारा जहाँगीर के शासनकाल के दौरान लिखा गया; *इन्शा–ए–हरकरन;* सुजान रॉय भंडारी (बटालवी) का *खुलासत–उत–तवारीख* (इतिहास का सार); औरंगजेब के शासनकाल के दौरान लिखे गये मुंशी और मलिकजादा के उपनामों से रचित एक अज्ञात लेखक का *निगारनामा–ए–मुंशी,* अठारहवीं शताब्दी में राय चतुरमन सक्सेना का *चहार गुलशन* हैं।

1.3 संस्मरण

इस अवधि के दौरान संस्मरण और आत्म कथाएँ और जीवन कथाऐं लिखने की एक सुस्थापित परंपरा रही है। बाबर ने अपने संस्मरण यद्यपि तुर्की भाषा में लिखे थे। बनारसी दास को जहाँगीर के शासनकाल के दौरान देशी भाषा में आत्मकथा लिखने का श्रेय दिया जाता है। फारसी में हमारे पास जहाँगीरनामा है।

1.3.1 जहाँगीरनामा

जहाँगीरनामा या *तुजुक–ए–जहाँगीरी* सत्रहवीं शताब्दी में लिखा गया एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जो संस्मरण शैली में लिखा गया है और जो डायरी लेखन की शैली के समान व्यक्तिगत यादों के संकलन से संबंधित है। सम्राट जहाँगीर (1569–1627) ने अपने परदादा बाबर द्वारा निर्धारित साहित्यिक परंपरा का अनुपालन करते हुए यह आत्मकथा लिखी, जिन्होंने *बाबरनामा* या *तुजुक–ए–बाबरी* की रचना की थीं। जहाँगीर ने 1622 तक स्वयं इस पुस्तक की रचना की और फिर मुतामद खान, उनके दरबारी इतिहासकार को वर्णन जारी रखने के लिए कहा। मुतामद खान ने 1624 तक सम्राट जहाँगीर के सहयोग से *जहाँगीरनामा* लिखा था जहाँ वृत्तांत अचानक समाप्त हो जाता है। *जहाँगीरनामा* पांडुलिपि के तेहरान संस्करण में मोहम्मद हादी द्वारा लिखित 1624 से 1627 तक की घटनाएँ दर्ज हैं।

जहाँगीरनामा फारसी की सरल लेकिन धारा प्रवाह शैली में तुर्की, हिन्दुस्तानी और कश्मीरी शब्दावली के साथ लिखा गया है। यह कालानुक्रमिक वार्षिक वृत्तांत जैसे तरीके से लिखा गया है, जो राजनीति, धर्म, सामाजिक मुद्दों और कला के बारे में जहाँगीर की विश्व दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है और एक प्रकृतिवादी, बुद्धिमान, न्याय संगत और कला के महान संरक्षक के रूप में उनकी अपनी छवि का निरूपण करता है। जहाँगीर चाहते थे कि उनकी आत्मकथा राजत्व पर एक अनुकरणीय सलाह पुस्तक के रूप में काम करे इसलिए उन्होंने इसका अनुवाद ओटोमन तुर्की में भी करवाया। उन्होंने *जहाँगीरनामा* की सुंदर रूप से चित्रित प्रतियाँ विश्व के विभिन्न भागों में भेजी।

1.3.2 पादशाहनामा

शाहजहाँ (1592–1666) ने मुहम्मद अमीन काजविनी को एक दरबारी इतिवृत *पादशाहनामा* (1638) का लेखन सौंपा, जिसने शाहजहाँ के शासनकाल के पहले दस वर्षों (1627–1637) का विवरण लिखा। इतिहास लेखन की इस शैली को तवारीख के रूप में जाना जाता है। काजविनी ने बताया कि शाहजहाँ ने अपने पूर्वज तैमूर की तरह पादशाहनामा की परियोजना में काफी रूचि ली। शाहजहाँ ने अब्दुल हमीद लाहौरी को पहले दस वर्षों के वर्णन को फिर से लिखने का काम सौंपा क्योंकि वह इतिहास को रिकार्ड करने के इस्लामी तरीके का हवाला देते हुए सौर कैलेंडर तिथियों को चन्द्र केलन्डर तिथियों में बदलना चाहता था। लाहौरी ने पादशाहनामा के नाम से शाहजहाँ के बीस वर्षों के शासन का विस्तृत विवरण तैयार किया। लाहौरी ने शाहजहाँनाबाद के निर्माण, इसकी वास्तुकला, किले और दिल्ली के बाजारों का वर्णन खूबसूरती से किया है। शाहजहाँ के शासनकाल के तीसरे दशक का लेखा–जोखा लाहौरी के शिष्य मुहम्मद वारिस ने लिखा था।

1.4 नामा परपंरा

औरंगजेब का शासनकाल (1658–1707) इतिहास के किसी भी पूर्ण आधिकारिक इतिवृत के बिना है। औरंगजेब ने शुरुआत में मिर्जा मुहम्मद काजिम को *आलमगीरनामा* अपने शासनकाल के इतिहास को विशिष्ट शैली नामा या आधिकारिक वार्षिक वृत्तांत की शैली में लिखने का आदेश दिया, जो इतिहास का एक अत्यधिक छानबीन करने वाला और बादशाह की रुचि के अनुकूल संस्करण था। इस तरह के इतिवृत लिखने के लिए उपयोग किये जाने वाले स्रोत वही थे जो *अकबरनामा* के समय में अबुल फजल द्वारा इस्तेमाल किये गये थे जैसे वाक्यानवी (घटनाओं का लेखक) के रिकॉर्ड, प्रान्तों से केन्द्र को भेजी गई गुप्त समाचार रिपोर्ट और अखबारात्–ए–दरबार–ए–मुअल्ला (दरबार की कार्यवाही और बादशाह के शिविर की रिपोर्ट)। इतिहासकारों ने बादशाह के परिप्रेक्ष्य से लिखे गये इतिहास का एक सटीक दिनांकित और विस्तृत संस्करण बनाने के लिए इन संसाधनों का कुशलता से उपयोग किया।

औरंगजेब ने अपने शासनकाल के दसवें वर्ष (1668) में इतिहास लेखन की परियोजना को रोक दिया और अरबी में *फतवा–ए–आलमगीरी* के शीर्षक के तहत् इस्लामी कानूनों को संहिताबद्ध करने का आदेश दिया। जदूनाथ सरकार ने तर्क दिया है कि इतिहास लेखन की अत्यन्त महँगी परियोजना को बन्द करने के पीछे राज्य की चिन्तनीय वित्तीय अवस्था प्रमुख कारक था। इसलिए, आधिकारिक इतिहास आलमगीरनामा औरंगजेब के शासनकाल के पहले दस वर्षों तक का ही है।

औरंगजेब के पुत्र बहादुरशाह के वजीर इनायतुल्लाह खान के अनुरोध पर साकी मुस्तैद खान द्वारा उनके शासनकाल के इतिहास को पूरा करने के इस कार्य को आगे बढ़ाया गया। इस कृति को *मासिर–ए–आलमगीरी* के नाम से जाना जाता है। जिसे दो भागों में संकलित किया गया; पहला आलमगीरनामा का छोटा संस्करण था जिसमें सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के पहले दस वर्षों को शामिल किया गया था और दूसरा भाग उनके शासनकाल के शेष चालीस वर्षों से संबंधित था। औरंगजेब आलमगीर के शासनकाल के बारे में निर्मित अन्य इतिहासग्रंथ मुहम्मद बख्तावर खान का *मिरात–अल–आलम*, अबुल फज़ल मामुरी का शीर्षक हीन इतिहास जिसे खफी खान ने अपनी रचना *मुन्तखाब–अल–लुबाब* (1731) में बड़े पैमाने पर शामिल किया था; भीमसेन का *नुस्खा–ए–दिलकुश* (1709); और एक गुमनाम इतिहासकार

द्वारा लिखित *तारिख–ए–शिवाजी* (1777), जो बाखर नामक मराठी देशी स्रोतों पर आधारित था, आदि हैं (देखें **इकाई 11, बी एच आई सी–144**)।

1.5 दबिस्तान–ए–मजाहिब

दबिस्तान–ए–मजाहिब (धर्मों के मत) 1653 में या उसके आसपास एक अज्ञात लेखक द्वारा संकलित किया गया था, जिसे मोबद, मुहसिन फानी, मिर्जा जुल्फिकार बेग और कैखुसरो इस्फानदयार जैसे भिन्न–भिन्न नामों से जाता है। पुस्तक समकालीन भारत में विभिन्न धर्मों और लोकप्रिय सम्प्रदायों का विवरण प्रदान करती है। यह बारह तालीयों या अध्यायों में विभाजित है जिसमें पहले पाँच अध्याय पारसी धर्म (जथुस्ट्र पंथ), हिन्दु धर्म और अन्य भारतीय संप्रदायों, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के बारे में हैं। शेष सात अध्याय इस्लाम और उसके संप्रदायों से संबंधित हैं। यह कई मायनों में एक अनूठा और महत्वपूर्ण स्रोत है, खासकर क्योंकि यह पाठ्य संसाधनों के उपयोग के साथ–साथ व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित है। ऐकेश्वरवादी संत कबीर पर पहली बार लिखित जानकारी प्रदान करने के लिए यह विशेष रूप से जाना जाता है। इतिहासकारों द्वारा सिख धर्म के बारे में इसमें उपलब्ध विस्तृत विवरण की बहुत सराहना की जाती है, क्योंकि वे लेखक के प्रत्यक्ष अवलोकन हैं जो नानकपंथ की सूक्ष्म समझ प्रस्तुत करते हैं। इरफान हबीव ने इस कृति को धर्म जैसे कठिन और जटिल मुद्दे के बारे में ज्ञान उपलब्ध कराने का एक काफी ईमानदार, निष्पक्ष और आवेगहीन बौद्धिक प्रयास कहा है।

1.6 शब्दकोश

गराईब–अल–लुघाट एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है जो इस तथ्य की गवाही देता है कि फारसी भारत के जीवन में एकीकृत हो गई थी। इसकी रचना अब्दुलवसी हसँवी (सत्रहवीं सदी के अंत में) ने की थी जो दिल्ली से 150 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित हाँसी शहर में एक शिक्षक और अग्रणी बुद्धिजीवी थे। *गराईब–अल–लुघाट* की सही तारीख ज्ञात नहीं है, लेकिन अधिकांश हस्तलिपियाँ 1730 के दशक की हैं। *गराईब–अल–लुघाट* 'भारतीय शब्दों का एक रिकॉर्ड था जिसमें फारसी, अरबी या तुर्की (समानार्थ) शब्द प्रान्तों के लोगों की बोली में कम प्रचलित थे, यह इंगित करता है कि लोगों के बीच फारसी के एक से अधिक स्वरूप लोकप्रिय थे। यह दिल्ली और लाहौर जैसे शाही शहरों से दूर दराज के क्षेत्रों और कस्बों में मौजूद थी। फारसी देशी भाषा के साथ ऐसी जगहों में स्वतंत्र रूप से प्रचलित थी जिससे स्थानीय शब्द फारसी की शब्दावली में प्रवेश करते थे। *गराईब–अल–लुघाट* का शब्दकोश ऐसे शब्द–कोशों की श्रृंखला का हिस्सा था जो सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में *फरहंग–ए–जहाँगीरी, फरहंग–ए–सुरूरी* और *फरहंग–ए–रशीदी* आदि के रूप में दिखाई पड़ते हैं। अठारहवीं सदी के प्रसिद्ध कवि और बुद्धिजीवी सिराज अल–दिन अली खान आरजू (1756) ने *नवादिर–अल–अल्फाज* के शीर्षक के नाम से वसी के *गराईब–अल–लुघाट* का एक अधिक लम्बा संस्करण संपादित और प्रकाशित किया। उन्होंने देशी फारसी को दरबारों में इस्तेमाल होने वाली शाही उच्च फारसी में इस्तेमाल होने वाली फारसी के रूप में प्रचलित करने लिए वसी की कृति को संशोधित किया। अब्दुल वसी हँसवी की रचनाएँ उन्नीसवीं शताब्दी में भी लोकप्रिय रहीं, यह इस तथ्य से ज्ञात होता है कि गालिब ने भी *गराईब–अल–लुघाट* में फारसी के प्रांतीय स्वर की प्रमुखता की आलोचना की थी।

गराईब–अल–लुघाट का उदाहरण एक अन्य परिप्रेक्ष्य से विशेष हो जाता है, वह यह है कि इसके लेखक अब्दुल वसी हंसवी उस मंडली का हिस्सा नहीं थे जिसे शाही दरबारों में संरक्षण प्राप्त था। वह एक शिक्षक थे जिन्होंने फारसी सीखने और सिखाने पर, जैसे कि समद बारी (निसाब), सादी की रचनाओं पर टिप्पणियाँ, *जवायद–अल–फवायद* (फारसी व्याकरण) और सबसे प्रभावशाली *रिसालाह* (निबन्ध) जैसी अत्यन्त महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं जिसने उनके नाम को घर–घर पहुँचा दिया। फारसी ने अपने लिए एक ऐसा स्थान और अर्थव्यवस्था बनाई थी कि यह हाँसी जैसे कस्बे में, अभिजात वर्ग के संरक्षण के बिना जीवित रह सकती थी। अब्दुल वसी जैसे बुद्धिजीवी जो कवि नहीं थे उन्होंने स्वयं को भारत में फारसी भाषा के विशेषज्ञ के रूप में स्थापित किया था। यह दर्शाता है कि प्रारंभिक आधुनिक भारत में फारसी केवल कविता या प्रशासनिक भाषा तक ही सीमित नहीं थी।

बोध प्रश्न 1

1) फारसी को भारत की आधिकारिक भाषा मानने की मुगल नीति के प्रमुख प्रभाव की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) सत्रहवीं और अठारहवीं सदी के दौरान लिखित कुछ प्रमुख फारसी पुस्तकों का सारांश लिखिए।

.....

.....

.....

.....

1.7 मुगल दरबार से परे फैलाव

आमतौर पर यह समझा जाता है कि प्रशासन और उच्च संस्कृति की भाषा होने के कारण फारसी की सभी देशी भाषाओं के ऊपर एक व्यापक आधिकारिक उपस्थिति थी। इस सर्वदेशीय और विदेशी भाषा, फारसी, को भारत के अभिजात वर्ग से अधिकतम् संरक्षण मिला। यह सदियों तक फलती–फूलती रही और दरबारी संरक्षण, शिक्षा, बौद्धिक ज्ञान उत्पादन और सबसे महत्वपूर्ण भारत की सैंकड़ों देशी भाषाओं और बोलियों के साथ चलते हुये भारतीय उपमहाद्वीप के हर हिस्से में पहुँची। उच्च सुसंस्कृत दरबारी प्रभाव से दूर भारत के आम लोगों की भाषा के रूप में यह दूरस्थ स्थानों, बाजारों, छोटे कस्बों और गाँव में प्रसारित हुई। दोनों स्थानीय भाषाओं जो गैर–साहित्यिक थी और देसी भाषाएँ जिन्हें भाखा या हिन्दवी के नाम से जाना जाता था, के साथ फारसी की परस्पर क्रिया के द्वारा साहित्यिक भाषाओं ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों में नई भाषाओं और बोलियों का निर्माण किया। इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि सल्तनत से मुगलकाल तक कई शताब्दियों के दौरान फारसी

भारतीय समाज में अच्छी तरह से स्थापित हो चुकी थी। आम हिन्दी कहावत ''हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े–लिखे को फारसी क्या'' इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है कि शिक्षित होना फारसी जानने के समतुल्य था। फारसी शब्द पूरे भारत में आम जनता की बोली में धीरे–धीरे रिसकर पहुँच गयी थी। जिसके कारण द्वि–भाषी शब्द पुस्तिकाओं या शब्दकोशों का प्रसार हुआ, जिसने फारसी भाषी व्यक्तियों को हिन्दवी शब्दों का अर्थ समझाया और इसके विपरीत भी।

1.7.1 क्षेत्रीय नकलें

मुगलों के अधीन फारसी में इतिहास लेखन की परपंरा ने क्षेत्रीय अभिजात वर्ग के इतिहास और अभिलेखागार की समझ को गहराई से प्रभावित किया। जैसा कि अगली ईकाई में चर्चा की गई है, नैणसी द्वारा जोधपुर में संकलित *नैणसी री ख्यात* और *मारवाड़ रा परगना री विगत,* अबुल फजल की *आईने अकबरी* से सीधे प्रभावित थी। इसी तरह, गुजरात प्रान्त के राजस्व मंत्री मुहम्मद अली खान द्वारा गुजरात में *मिरात–ए–अहमदी* का संकलन किया गया था। यह 1748 और 1762 के बीच लिखी गई थी। यह एक ऐसे पाठ का एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें क्षेत्रीय इतिहास के ऐतिहासिक वर्णन को विस्तृत अनुभवजन्य आँकड़ों के माध्यम से पूरा लिखा गया था। वह प्रान्त की बुनियादी राजनैतिक संरचना, इसकी भौगोलिक विशेषताओं और विभिन्न क्षेत्रों से अर्जित राजस्व राशि और सैन्य अनुचरों के वितरण के बारे में विवरण प्रदान करता है। इसमें गुजरात का ऐतिहासिक लेखा–जोखा, तुर्की सेना की विजय से पहले राजपूत शासकों के समय से शुरू किया गया है और फिर दिल्ली के सल्तनत शासकों का वर्णन किया गया है। उसने गुजरात सल्तनत का इतिहास लिखने के लिए सिकन्दर–बिन–मुहम्मद उर्फ मंझु की *मिरात–ए–सिकन्दरी* से बहुत कुछ उधार लिया है। यह जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब के इतिहास और 1761 में पानीपत के युद्ध में मराठों की हार के बारे में बहुमूल्य जानकारी देता है। पुस्तक के खातिमा या परिशिष्ट में कस्बों, परगनों और धार्मिक स्थलों आदि का महत्वपूर्ण विवरण है।

1.8 फारसी और देसी भाषाएँ

जैसा कि ऊपर तर्क दिया गया है, यह मानना गलत होगा, कि फारसी केवल मुगल दरबारों या क्षेत्रीय शक्तियों के दरबारों तक ही सीमित रही। सत्रहवीं शताब्दी में फारसी और देसी भाषाओं के बीच जबरदस्त अन्तःक्रिया देखी गई, जिससे अक्सर दोनों की शब्दावली और साहित्यिक संवेदनाएं शामिल हुई।

1.8.1 उर्दु का उदय

अठारहवीं शताब्दी में भारत में उर्दु का उदय एक रसायनिक प्रतिक्रिया के समान है, जिसमें एक विदेशी तत्व जब देशी रसायनों के मिश्रण के साथ मिलाया जाता है, तो वह एक नये रसायन का उत्पादन करने के लिए रसायनों को उत्प्रेरित करता है। फारसी, जो कभी विदेशी भाषा थी उसका भारत में प्रवेश हुआ, लेकिन इसका विभिन्न बोलियों और भाषाओं की प्रचुरता वाले भारत के लोगों द्वारा स्वागत हुआ और यह विरासत का हिस्सा बनी। इसने फारसी भाषा में उपयोग की जाने वाली नई शैलियों और कल्पनाओं को पेश करके भारत की साहित्यिक संस्कृतियों को समृद्ध किया। इसने दिल्ली और उसके आस–पास बोली जाने वाली भाषा

खड़ी बोली (शुद्ध बोली) के साथ परस्पर क्रिया की, जिससे उर्दु नामक एक नई भाषा का उद्‌य हुआ। एक पूर्ण भाषा के रूप में उर्दु के विकास के कई चरण थे जिनमें रेख्ता देशी भाषा के साथ प्रयोग के प्रारंभिक चरण का प्रतिनिधित्व करता है। रेख्ता एक फारसी शब्द है, जिसका अर्थ है मिश्रित, घोला हुआ, अन्तर्विष्ट जो उस कविता का प्रतिनिधित्व करती है जब फारसी की एक पंक्ति हिन्दी की दूसरी पंक्ति के साथ बारी–बारी आती थी। मीर तकी मीर को अठारहवीं शताब्दी के सबसे महान उर्दु कवि के रूप में जाना जाता है जो खुद को रेख्ता का कवि कहते है। मीर ने अपनी *तजकिराह, निकतअश–शुआरा* में रेख्ता को 'काव्य के ऐसे रूप में परिभाषित किया है, जिसमें कविता की शैली और कविता फारसी कविता की है लेकिन इसमें भाषा दिल्ली के बुलन्द दरबार की है'। आइये एक उदाहरण पर गौर करें जिसमें एक रेख्ता कविता की सबसे प्रसिद्ध पंक्तियों का श्रेय गलत तरीके से अमीर खुसरों (लगभग 1253–1325) को दिया गया है। इसमें प्रत्येक पंक्ति का पहला भाग फारसी में हैं दूसरा आधा भाग ब्रज भाषा में है:

जेहाल–ए–मिस्कीन मकुनत गाफुल दुराए नैना बनाए बतिया

किताब–ए–हिज्रा नदारम ऐजां ना लेहू काहे लगाए छतिया,

इस गरीब के हाल से तगाफुल ना बरत आँखे ना फेर बाते ना बना

अब जुदाई की ताब नहीं है मेरी जान मुझे अपने सीने से क्यूँ नहीं लगा लेता।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि रेख्ता का यह नया रूप फारसी लिपि और खड़ी बोली तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने नागरी लिपि में मिश्रित भाषाओं के कई अन्य संयोजन बनाए थे। इमरे बंगा कहते हैं कि रेख्ता को ''विस्तारित फारसी, गुरमुखी, कैथी या नागरी लिपियों में किसी भी कविता को कहा जा सकता है, जो सचेत रूप से देसी हिन्दवी (ब्रजभाषा सहित और सर्वदेशीय फारसी को मिश्रित करती है''। इसलिए, स्थानीय भाषाओं में सक्रिय साहित्यकारों के वर्गों में, फारसी–अरबी शब्दावली की उच्च सामग्री वाली भाषाओं के कुछ नये मिश्रित संस्करण बनाने के लिए, फारसी का आत्मसातीकरण किया गया था। मिश्रण और समामेलन के ऐसे उदाहरण इस धारणा को अस्वीकार करते हैं कि फारसी एक आधिपत्य वाली विदेशी भाषा थी जिसकी भारतीय देशी भाषाओं पर प्रतिष्ठित उपस्थिति थी।

1.8.2 दो–भाषी

बंगाल प्रांत भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे पूर्वी भाग है जहाँ फारसी ने सल्तनतकाल के दौरान एक मजबूत उपस्थिति स्थापित की थी। प्रशासन व फारसी के उपयोग के संबंध में अकबर की नीति मुगल भारत के अन्य क्षेत्रों के समान ही फलदायी ही रही। बंगाल में एक बड़ा नौकरशाही वर्ग विकसित हुआ जिसने बंगाल में फारसी की लोकप्रियता के लिए आधार तैयार किया जो उन्नीसवीं शताब्दी तक जारी रहा। चौदहवीं, पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान बंगाल के साहित्य में प्रयोग होने लगे, जिसमें फारसी और विभिन्न बंगला बोलियों को समामेलित किया गया। मिश्रण की यह प्रक्रिया, जिसे हम उत्तर भारत में रेख्ता के नाम से जानते हैं, बंगाली के एक नये स्वर विस्तार को लोकप्रिय बनाने में त्वरित हुई जिसे दो–भाषी के नाम से जाना जाता है। दो भाषी जिसका अर्थ है द्विभाषी, एक नई शैली के रूप में पहली बार उन लेखकों के द्वारा शुरू की गई थी जो अरबी, फारसी और बांग्ला भाषाओं के विशेषज्ञ थे। दो भाषी में निर्मित प्रारंभिक साहित्य सामग्री, विषय–वस्तु और पात्रों में प्रबल इस्लामी प्रभाव दर्शाता है, खासकर इसलिए कि यह मुस्लिम विद्वानों द्वारा निर्मित किया गया था।

फकीर गरीबुल्लाह (लगभग 1680–1770) ने अपनी कृति *अमीर हमजा* के साथ इसे और लोकप्रिय बनाया, जो अपनी अत्यधिक फारसी शब्दावली के कारण पहले के बंगला साहित्य से भिन्न थी। फकीर गरीबुल्लाह और उनके शिष्य सैयद हमजा ने हुगली–हावड़ा क्षेत्र में बोली जाने वाली एक बोली में *हातिमताई* (1804), *जंगनाम, जयगुनेर पुलि* (1798) जैसे कई महाकाव्यों और कविताओं की रचना करके दोभाषी को लोकप्रिय बनाया। दोभाषी को पुथि (पुस्तक) और मुस्लिम बांग्ला जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है। ये महाकाव्य कविताएँ फारसी लिपि में लिखी गई थी, जो एक बहुमुखी देसी बांग्ला में अनुकूलित की गई थी, जो आसानी से फारसी व्याकरण का उपयोग कर सकती थी। दोभाषी ना केवल एक साहित्यिक भाषा थी, बल्कि हावड़ा, हुगली, सिलहट और चटगाँव में रहने वाले मुसलमानों की एक बड़ी आबादी द्वारा बोली जाती थी, जहाँ इसे पूर्वी नागरी और सिलहट नागरी लिपि में लिखा जाता था।

बोध प्रश्न 2

1) क्या यह कहना सही है कि प्रारंभिक आधुनिक काल में फारसी भारत में एक विदेशी भाषा बनी रही? अपने तर्क की पुष्टि के लिए उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) भारत में रेख्ता साहित्य के विकास का वर्णन कीजिए। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के भारत में पाये जाने वाले रेख्ता के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

1.9 सारांश

प्रशासन के फारसीकरण का तत्काल प्रभाव लिपिकों के एक बड़े वर्ग का विकास था, जिन्होंने मुगल प्रशासन में आकर्षक नौकरशाही नौकरियों तक पहुँच प्राप्त करने के लिए फारसी सीखी। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी, वे शताबिदयाँ थीं जब भारतीय लोग शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, नैतिकता, राजनीति, संस्कृति और अर्थविज्ञान के अनेक क्षेत्रों में फारसी के साथ गहराई से जुड़े। भारतीयों ने न केवल भाषा में महारत हासिल की और फारसी की दुनिया में एक विशिष्ट *सबक–ए–हिन्दी* का निर्माण किया, बल्कि उन संवेदनाओं, कल्पनाओं, बौद्धिक और सांस्कृतिक परंपराओं को भी आत्मसात् किया जो फारसी भाषा ने पेश की थी। मुगलराज्य के सुदृढ़ीकरण के साथ फारसी का प्रसार कई गुणा बढ़ गया जहाँ यह एक परिष्कृत उच्च संस्कृति की भाषा के रूप में उभरी। पुस्तकों और शाही दस्तावेजों का प्रसार सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी की विशिष्टता है। अठारहवीं शताब्दी में फारसी जनता तक

गहराई तक पहुँची जिससे रेख्ता, नागरी रेख्ता, दोभाषी आदि के रूप में इसने नई मिश्रित देसी भाषाओं और स्वर विस्तार की प्रचुरता का निर्माण किया।

1.10 शब्दावली

फारसी : पर्शियन को इसके उपनाम फारसी के रूप में भी जाना जाता है, जो एक ईरानी भाषा है। जो इंडो–यूरोपीय भाषाओं की उपशाखा की ईरानी शाखा से संबंधित है।

रेख्ता : रेख्ता एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है डालना, मिलाना या मिश्रित। यह अठारहवीं शताब्दी में फारसी–अरबी शब्दावली के साथ मिश्रित खड़ी बोली के रूप में प्रकट हुई।

मुंशी : एक लेखक, सचिव, लिपिक या भाषाविद्, गद्य का रचनाकार।

दो–भाषी : दो–भाषी पूर्वी नागरी, सिलहेटी नागरी और फारसी–अरबी लिपि में लिखी नई बंगाली भाषा का एक अत्यधिक फारसीकृत स्वर विस्तार था।

परशियनेट वर्ल्ड : यह एक अन्तर्क्षेत्रीय या ''विश्व'' प्रणाली है जो धार्मिकता, शासनकला, कूटनीति, व्यापार, सामाजिकता, या व्यक्तिपरखता के उस साझा ज्ञान से उत्पन्न हुई जिस तक यूरेशिया के अन्तर्संबंध संगम बिन्दुओं पर लिखित फारसी के सामान्य उपयोग के माध्यम तक पहुंच थी और जो उस समय परिचालित था।

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्रशासन के फारसीकरण के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक देसी नौकरशाही वर्ग का उदय है। तत्कालीन भारत की शिक्षा प्रणाली बुनियादी से उन्नत फारसी की शिक्षा की शुरूआत के कारण गहन रूप से बदल गई थी जो छात्रों को मुगल प्रशासन में नौकरी पाने में मदद कर सकता था। जल्द ही, भारत ईरान को पीछे छोड़ते हुए पर्शिनिएट दुनिया में सबसे अधिक फारसी साक्षर क्षेत्र बन गया।

2) सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान लिखी गई कई फारसी पुस्तकें हैं। उनमें से कुछ हैं *तुजुक–ए–जहाँगीरी, चहार चमन, खुलासातुत–तवारिख, पादशाहनामा, मासिर–ए–आलमगीरी* आदि।

बोध प्रश्न 2

1) आमतौर पर यह माना जाता है कि अठारहवीं शताब्दी के अन्त में उर्दु ने आसानी से फारसी का सफाया कर दिया क्योंकि फारसी भारत में एक छोटे से अल्पसंख्यक वर्ग की भाषा थी। यह बड़े पैमाने पर जनता के लिए एक विदेशी भाषा के रूप में बनी रही, जिसने उर्दु को तहेदिल से स्वीकार किया क्योंकि वह एक स्थानीय भाषा थी।

2) रेख्ता का अर्थ मिश्रित और छिन्न–भिन्न हुआ होता है। फारसी की अखिल–भारतीय उपस्थिति से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई मिश्रित भाषाओं का विकास हुआ, जो एक सामान्य कारक के रूप में फारसी के साथ कई लिपियों में लिखी जाती थी। इसे दादुदयाल और सुन्दरदास जैसे निगुर्ण संतों की नागरी लिपि में और दक्कन और दिल्ली में रचित फारसी लिपि को प्रारंभिक रेख्ता कविता में देखा जा सकता है।

इस इकाई के लिए कुछ उपयोगी अध्ययन सामग्री

Subrahmanyam, Sanjay, and Muzaffar Alam. 2001. *Writing the Mughal World: Studies on Culture and Politics*. New York: Columbia University Press. doi:10.7312/columbia/9780231158114.001.0001

Habib, Irfan. 2000. "A Fragmentary Exploration Of An Indian Text On Religions And Sects: Notes On The Earlier Version Of The 'Dabistan-I Mazahib.'" *Proceedings of the Indian History Congress*, Vol. 61, pp. 474–91. http://www.jstor.org/stable/44148125.

Alam, Muzaffar. 1988. "The Pursuit of Persian: Language in Mughal Politics." *Modern Asian Studies* Vol. 32, no. 2, pp. 317–49. http://www.jstor.org/stable/313001.

Chatterjee, Kumkum. 2008. "The Persianization of 'Itihasa': Performance Narratives and Mughal Political Culture in Eighteenth-Century Bengal." *The Journal of Asian Studies*, Vol. 67, no. 2, pp. 513–43. http://www.jstor.org/stable/20203376.

Bangha, Imre. 2012. "Rekhta, Poetry in the Mixed Language: The Emergence of Khari Boli Literature in North India" in Francesca Orsini ed. *Before the Divide: Hindi and Urdu Literary Culture*. New Delhi: Orient Blackswan, pp. 22-88. Doi: (PDF) Rekhta, Poetry in Mixed Language | ImreBangha - Academia.edu.

Hakala, Walter. 2016. *Negotiating Languages, Urdu, Hindi and the Definition of Modern South Asia*, New York: Columbia University Press.

Sharma, Sunil. 2017. *Mughal Arcadia: Persian Literature in an Indian Court*, Massachusetts: Harvard University Press.

Kinra, Rajeev. 2015. *Writing Self, Writing Empire: ChandarBhan Brahman and the Cultural World of the Indo-Persian State Secretary.* Oakland: University of California Press. https://www.luminosoa.org/site/books/m/10.1525/luminos.3/

Jahangir, Emperor of Hindustan. *The Jahangirnama*. Freer Gallery of Art, Arthur M. Sackler Gallery, Smithsonian Institution, 1999. https://dx.doi.org/10.5479/sil.849796.39088018028456

Green Nile. 2019. *The Persianate Wolrd*. California: University of California Press. DOI: https://doi.org/10.1525/luminos.64.

Rezavi, Ali Nadeem. "*Sources of Aurangzeb's Reign*." 14 October 2021. https://rezavisblastfromthepast.co.in/2021/10/14/sources-of-aurangzebs-reign/.

Dudney, Arthur. 2019. 'Persian-Language Education in Mughal India from Qasbah to Capital', in Maya Burger and Nadia Cattoni, Eds., *Early Modern India: Literatures and Images, Texts and Languages*. Reprint, Heidelberg/ ; Berlin: Cross Asia-eBooks. https://doi.org/10.11588/xabooks.387.552.